राहुलदेव बर्मन

परंपराओं के बंधन को नकारता लहराता संगीत

• डा. इंदु बिश्नोई

"तेरी मेहरबानी . . .' पूरे आर्केस्ट्रा के साथ रिकार्डिंग स्टूडियो में आवाज गूंज रही है. पूरे माहौल में सुर ही सुर. लेकिन वाद्यों के सुर सागर में एक कंठ स्वर मस्ती से गा रहा है. 'बाहों में क्यों न मर लूं. . .' गीत समाप्त हो रहा है. रिकार्डिस्ट कौशिक बाबा का अंगूठा उठता है. वेडरफुल सपन चक्रवर्ती (पंचम जिन्हें अपना बड़ा भाई मानते हैं) और सहायक मनोहारी सिंह दोनों के हाथ खुशी से ऊपर हवा में लहराते हैं, "वाह, हो गया!" किसकी है यह सधी हुई, मंजी हुई आकर्षक आवाज. . . . . येसुदास. न . . . किशोरकुमार. . . न. हु ऽ ऽ ऽ हु ऽ ऽ हु ऽ . . . अनायास 'मेहबूबा मेहबूबा' के परिचित स्वर दिमाग में उभरते हैं. ओह, तो यह स्वयं पंचम की आवाज है.

पंचम की आवाज में भी अपनी कशिश है. परंपरा वादी लोग इसे क्यों नहीं मान रहे? कितनी ही शिकायतें सुनी हैं लोगों से. तो क्या आर. डी. का संगीत शोर गुल है? जाने कितने ही प्रश्न करवटें लेने लगते हैं मगर . . .

> "स्वरों के अथाह सागर में जब भी कोई नयी लहर किसी भी जरिये से उठती है, मेरे कान उसे पकड़ लेते हैं और मेरा मन उसे पुनर्जन्म देने के लिए बेचैन हो उठता है...संगीत को बांधकर रखना हिपोक्रेसी है."

अनुभव अतीत के

बातचीत पंचम के संगीत संसार में प्रवेश होने की जिज्ञासा से शुरू होती है. पंचम बोलते चले जाते हैं. यादों और अहसासों का एक सिलसिला यों शुरू होता है जैसे कि गायक पूर्वांग प्रधान राग में, स्वरों की सीढ़ियों से मंद सप्तक उतर रहा हो. वे अतीत में उतर कर बचपन तक पहुंच जाते हैं.

"मैं बचपन में कलकत्ता में पढ़ता था. मेरे पिताजी यानी श्री एस. डी. बर्मन बंबई में रहते थे. करीब १२ साल का था तो मैं यहां आया. लता जी की रिकार्डिंग थी. मैंने देखा कि एक नाटे कद की सादी सी महिला बहुत साधारण किस्म की साड़ी पहने आकर बैठ गयी और गाने लगी. मैंने रिहर्सल सुना और सोचा कि बाबा क्या सुनवाने ले आये. लेकिन ज्यों ही लता बाई माइक पर पहुंची, मैं मंत्रमुग्ध हो गया. यूं लगा कि कोयल संगीत साध कर गा रही है, 'ठंडी हवाएं लहरा के आयें. . .!'

क्या इसीलिए आपने अपना नाम पंचम रख लिया?

"पंचम नाम तो दादा मोनी उर्फ श्री अशोककुमार का दिया हुआ है. बात सन '४३ की है जब हम सायन में रहते थे. हमारे एक पड़ोसी श्री अनादि बनर्जी के घर उस समय के संघर्षशील कलाकारों व सफल कलाकारों का अड्डा जमता था. देव आनंद भी वहां आते थे. तब तक उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली थी. उन्हीं दिनों दादा मोनी श्री एस. मुखर्जी की एक फिल्म में एक गाना गा रहे थे. 'डोल रही है नैया मेरी.' वे जब अभ्यास करते थे तो मुझे पास बैठा लेते थे. मुझे गाने को कहते थे. मैं 'सा रे ग म प' कह कर अटक जाता था. 'प' पर मेरा वह अटकाव देख कर दादा मोनी ने मुझे पंचम कह कर छेड़ना शुरू कर दिया. धीरे धीरे बाबा के आसपास के सब लोग मुझे पंचम ही कहने लगे. मैंने बाबा से थोड़ी शिकायत भी की, परंतु वे उल्टे हंस कर मुझे समझाने लगे."

इरादा संगीत निर्देशन का

'सा रे ग म प ध नी सा' सात सुरों की सप्तक का 'प' उर्फ पंचम संगीत का सबसे मार्मिक और प्रभावशाली स्वर है. जो हर राग और थाट में अपनी मिठास ज्यों की त्यों अचल रखता है. इतना ही नहीं शास्त्रीय संगीत में पंचम एक प्रेमभाव का प्रतीक है जो हर पांचवें स्वर में परस्पर रहता है. मसलन 'स' का महबूब है 'प' यानी पंचम, ऋषभ 'रे' का महबूब है धैवत 'ध', गंधार 'ग' का निषाद 'नी' और आगे इसी तरह. संक्षेप में संगीत में षडज-पंचम भाव का अर्थ है प्रेम भाव और पंचम का अर्थ है महबूब या प्रेमी.

पंचम उर्फ आर. डी. बर्मन ने आगे कहा, "बस उसी दिन सोच लिया कि मैं भी इसी तरह संगीत निर्देशक बनूंगा और लोगों को गवाऊंगा. लेकिन यह बात बाबा से कहने का मौका आया तब जब मैंने अपने विद्यालय के उत्सव में माउथ आर्गन बजाया. बाबा भी वहां थे. शायद काफी बढ़िया बज गया था. लोगों ने बड़ी तारीफ की थी. बाबा ने भी उस दिन मुझसे मेरे भविष्य के

Generated by CamScanner from intsig.com

राहुलदेव बर्मन उर्फ पंचम की संगीत सर्जना के मुख्य स्तंभ . . . (बायें से) जीवन सहचरी आशा भोसले, पंचम, पिता स्व. सचिनदेव बर्मन तथा सहायक मनोहारी.

संगीत की साधना में रत आर. डी. के सृजन का एक एकांत क्षण. →

बारे में पूछा और मैंने अपनी मंशा बता दी.

"बाबा ने सबसे पहले मुझे तबला सिखवाया. उस समय मैंने सोचा कि बाबा भी अजीब हैं. संगीत निर्देशक का तबले से क्या संबंध? लेकिन बीस साल बाद मालूम पड़ा कि जीवन में संगीत का समारंभ लय के साथ ही होता है. इसका प्रमाण आज भी जन-जातियों के संगीत में मिलता है. उसी लय ने मेरे लिए सफलता के रास्ते बनाये." पंचम कहते जा रहे थे, "तबले का ज्ञान यानी ताल का ज्ञान, ताल का ज्ञान अर्थात् जीवन और संगीत में समय की महत्ता का ज्ञान. 'सम' की महत्ता का ज्ञान जिंदगी में सही मौके का ही ज्ञान है.

निर्माण की प्रक्रिया

"फिर मैंने अली अकबर खां साहब को गुरु बनाकर शिष्यता का गंडा बंधाया. लेकिन कुछ खास वैसा नहीं सीखा जैसा कोई और सीखता. हां, उस नाते से मेरा उनके घर जाने का नियम बन गया. उन दिनों रवि-शंकरजी, अन्नापूर्णा जी और अली अकबर खां साहब मिल कर बैठते थे और तरह तरह की बंदिशें और धुनें बनाया करते थे. १९५० से '५६ तक पूरे छः वर्ष संगीत के निर्माण की प्रक्रिया मैंने का अनुभव किया और शायद वह मेरे तन मन में रम गयी. उसी समय पाश्चात्य संगीत और भारतीय संगीत के तुलनात्मक रूप को मैंने समझा, य़ू कहिए कि आत्मसात किया. हम क्या और क्यों पसंद करते हैं, पश्चिम के लोग क्यों और कैसे पसंद करते हैं. सुनने वाले कब किस स्थिति में क्या पसंद करते हैं, यह सब उसी समय मैंने जाना. रविशंकर जी, अन्न-पूर्णा जी और अली अकबर खां साहब इन विषयों पर खुलकर बहस करते थे और मुझे भी उनमें शामिल होने की प्रेरणा देते थे. शायद संगीत के क्षेत्र में तभी से मेरा थोड़ा दखल हो गया.

"१९५६ में गुरुदत्त जी ने एक फिल्म शुरू की थी 'राज', जो ८ रील बना कर स्क्रेप कर दी. उस फिल्म के लिए उन्होंने मुझसे दो गाने कंपोज करवाये थे. उनमें से एक महमूद साहब ने अपनी 'छोटे नवाब' फिल्म में ले लिया. यह मेरी प्रदर्शित होने वाली सबसे पहली फिल्म थी."

फिल्मों में आने के कुछ दिनों के बाद आप पर लोगों ने पाश्चात्य धुनों को चुराने और ज्यादा से ज्यादा पाश्चात्य साज काम में लाने का इल्जाम लगाना शुरू कर दिया. क्यों?

पंचम थोड़े चिंतित होते हैं. फिर कहते हैं, "शायद यह मेरा भाग्य है. मेरी पहली हिट फिल्म थी 'हरे राम हरे कृष्ण'. उस फिल्म से पहली बार लोगों के सामने हिप्पी कल्ट इतना खुल कर आया था. हिप्पियों के लिए और उस पूरे माहौल के लिए उसी तरह के संगीत की पृष्ठभूमि तैयार करनी पड़ी जो निःसंदेह हिंदुस्तानी नहीं हो सकती थी. लेकिन उसमें कोई भी ऐसी चीज नहीं थी जो किसी और संगीतकार की हो. हालांकि उसका आधार पाश्चात्य थाठ ही था.

"उसी समय जब मुझे अपने बारे में ऐसे प्रतिवाद सुनाई दिये तो बुरा लगा. मैंने अपना दर्द बाबा (एस. डी. बर्मन) से कहा. वे बोले—'पंचम, तुम्हें खुश होना चाहिए कि तुम्हारा इतनी छोटी सी उमर में नाम हो गया.' मैंने कहा—कैसे? बाबा ने कहा—'तुम्हारा संगीत लोगों के दिल तक पहुंचा है, तभी तो लोग उसके बारे में बात करते हैं! हां . . . नये लड़के हो, नयी तरह से अपनी चीज पेश करते हो, इसलिए लोगों को जरा खटक रहा है. धीरे धीरे सब ठीक हो जायेगा'. उनकी बात सच ही थी.

"मैं हमेशा विषय वस्तु की मांग यानी 'सब्जेक्ट की डिमांड' के अनु-सार संगीत संजोता हूं. संगीत के स्वरों की भी अपनी एक भाषा है जो बिना किसी दूसरे माध्यम के सहारे ही प्रभावित करती है. फिल्म के वाता-वरण को अधिक प्रभावशाली बनाना हो तो उसी तरह का संगीत संकलन भी करना जरूरी होता है. विषय के अनुसार संगीत को प्रस्तुत करने का प्रमाण मेरी 'आंधी', 'किनारा' और 'खूबसूरत' जैसी ढेर सारी फिल्मों में देखा जा सकता है."

'किनारा' में धर्मेंद्र और हेमा मालिनी पर फिल्मायी गयी नितांत अतुकांत कविता 'एक ही ख्वाब कई बार देखा है मैंने' का जिक्र चला तो पंचम ने बताया—"हुआ यह कि गुल-जार भाई कहने लगे कि 'यह कविता मैं पढ़वाना चाहता हूं लेकिन . . .' मैंने पूछा, लेकिन क्या? मैं इसे गवा सकता हूं. तो वे चौंके, 'कैसे? यह तो एकदम मुक्त छंद है'.

मैंने कहा, "देखो भइया, तुम कविता पढ़ो, मैं गाता जाता हूं. तुम्हें जमे तो कहना. गुलजार कविता की एक एक लाइन पढ़ते गये और मैं गाता गया. इतने सुंदर स्वर बन पड़े कि उन्हें फिल्म में स्थान मिल गया."

पंचम कुछ रुककर कहते हैं, "मैं अपने को परंपराओं में बांध कर कला की सेवा नहीं करना चाहता. मैं तो स्वरों की विविधता पर कुरबान हूं. स्वरों के अथाह सागर में जब भी कोई नयी लहर किसी भी जरिये से उठती है, मेरे कान उसे पकड़ लेते हैं. मेरा मन उसे पुनर्जन्म देने के लिए बेचैन हो उठता है. विश्व में कहीं भी कोई नया इंस्ट्रूमेंट (साज) बनता है तो मैं उसे पा लेने की पूरी कोशिश करता हूं और हासिल करके छोड़ता हूं. उसको बजाने वाला तैयार करता हूं. आज जब दुनिया के लोग हर तरह एक दूसरे के इतने करीब आ रहे हैं, संगीत को बांध कर रखना हिपोक्रेसी है.

इल्जाम की बात

"रही लोगों के इल्जाम लगाने की बात तो इस सिलसिले में मुझे पिछले दिनों की एक घटना याद आती है. 'जुर्माना' में मैंने एक गीत रवींद्र संगीत पर आधारित करके कम्पोज किया है. बस बंगाल में शोर मच गया, 'देखो पंचम के पास धुनों का खजाना खत्म हो गया और रवींद्र संगीत पर आ गया. वे लोग, जिनके पास रवींद्र संगीत की कापी राइट है, उनकी सुनिए. मुझसे कहा कि रवींद्र संगीत में किसी पाश्चात्य वाद्य का बैक ग्राउंड नहीं होना चाहिए. मैंने कहा, तुम्ही दिखा दो कि क्या क्या काम में लाते हो? . . . देखा तो गाने के साथ वायलिन, आर्गन, हवाइयन इलेक्ट्रिक गिटार तथा तबला बज रहा था. आप ही बताइए कि

(शेष पृष्ठ २० पर)

Generated by CamScanner from intsig.com

राहुलदेव बर्मन...

(पृष्ठ १० से आगे)

तबले के अलावा इसमें और कौन सा वाद्य भारतीय मूल का था या तानसेन ने बनाया था ?"

मुझे उनके कहने के स्टाइल पर हंसी आ जाती है, लेकिन बात ठीक जंचती है. हम भारतीय लोग किसी नवीनीकरण को जल्दी से नहीं पचाते. लेकिन जब वह खूबसूरत बनकर आये तो क्या कहेंगे, हां देखिए न 'खूबसूरत' फिल्म में 'पिया बावरी' का गीत भारतीय और पाश्चात्य पद्धति का जैसा समन्वय प्रस्तुत करता है, वह क्या भुलाया जा सकता है ? गौड़ सारंग के स्वरों के बीच वायलिन तथा अन्य वाद्यों की सिम्फनी को इस तरह घुला मिला दिया गया है कि संगीत का जानकार उसके चमत्कार पर दंग रह जाता है.

लोक संगीत से प्यार

पंचम कहते हैं, "मैं भारतीय संगीत और लोक संगीत से प्यार करता हूं. भारतीय वाद्यों का भरपूर उपयोग भी करता हूं. आप खुद ही रिकार्डिंग में देख लें." पंचम, स्टूडियो के फ्लोर पर एक जगह है. असिस्टेंट मनोहारी सिंह अरेंजर की जगह है. वायलिन इफैक्ट . . रिहर्स रिहर्स . . आरगन . . बांसुरी. . . ड्रम . . . संतूर . . . . क्लार्नेट . . गिटार . . मैंटलड्रम . . . . वायलिन . . .

रिहर्सल एक, रिहर्सल दो, रिहर्सल तीन . . . टेक. . . पंचम साउंड रिकार्डिस्ट के साथ 'टेक' पर बैठे हैं. एक फिल्म का पांच मिनट का टुकड़ा और बैक ग्राउंड म्यूजिक की रिकार्डिंग का कैसा ताल मेल और समन्वय बैठा है. स्वदेशी विदेशी का भेद बिसरा कर स्वर लहरी की विविधता का आनंद ही मन में रह जाता है. पहाड़ी वातावरण के निर्माण के लिए संतूर और बांसुरी, उत्तेजना के लिए वायलिन की ग्रूप हारमोनी वगैरह.

संगीत रचना में सहयोग करने वाले सहायकों तथा उनके योगदान के बारे में पूछने पर पंचम कहते हैं, "मेरे काम में हर सहायक और सहयोगी की हैसियत एक दोस्त जैसी है. अभी कुछ दिन पहले एक फिल्म निर्माता को एक गाना पसंद नहीं आया. मेरे सहायक बासु और मनोहारी ने मुझसे काफी देर तक बहस की और उसकी धुन को उलट दिया. वे ही स्वर इधर उधर किये और आश्चर्य कि निर्माता को पसंद आ गया. तीसरे सहयोगी मारुति राव हैं और सपन चक्रवर्ती तो मेरे बड़े भाई जैसे हैं. कभी गीतकार, कभी गायक, कभी बिजनेस एक्जीक्यूटिव और क्या क्या कहूं. सारा कुछ उन पर ही निर्भर है. उन्हें असिस्टेंट मैं नहीं कह सकता."

अभिव्यक्ति यथार्थ की

एक बड़ी मार्मिक बात इसी के बाद पंचम ने कही, "संगीत मेरे लिए आत्मिक अभिव्यक्ति का स्वाभाविक साधन बन गया है. जीवन की छोटी छोटी अनुभूतियां मेरे अंदर अलग अलग तरह के स्वर समूहों और स्वर रचनाओं को जन्म देती हैं. एक दिन सुबह दो चिड़िया बैठी थीं, आपस में चूं चूं का मीठा आदान प्रदान कर रहीं थीं. न जाने कैसे उसी अंदाज में कुछ स्वर मैं भी गुनगुना उठा. गाने लगा तो एक के बाद एक कई अंतरे बन गये."

क्या कुछ कविता के शब्द भी ये उनमें ?

"नहीं. संगीत के स्वरों में भी अभिव्यक्ति की क्षमता है जो देशकाल से आगे जाकर हरेक को प्रभावित करती है. भारतीय थाट और राग पद्धति तो इसी पर आधारित है." आगे कहने लगे, "जिंदगी के भोगे हुए मुकामों को जब फिल्म में देखता हूं तो उन्हें संगीत देते हुए, कुछ और ही तरह की कशिश भरी अनुभूति का अनुभव होता है."

जो व्यक्ति प्रकृति के इतने सूक्ष्म क्रियाकलापों से प्रभावित हो कर नयी स्वर रचनाओं को जन्म देता है, वह अपने जीवन की अन्य बहुत सी घटनाओं और व्यक्तियों से कितना ज्यादा प्रभावित होता होगा. यह सोच कर मैंने तुरंत सवाल दाग दिया, "जब आप प्रकृति से इतने प्रभावित होते हैं तो आसपास के व्यक्तियों से तो बहुत प्रभावित होते होंगे ?" मैं उनके चेहरे पर तल्लीनता का भाव महसूस कर रही थी. वे उसी तन्मयता से बोले, "मुझे प्रभावित करने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे मेरे पिता जी. मैं कई बरस उनका अनपेड असिस्टेंट रहा. दूसरे थे स्व. जयकिशन, जिनसे मैं अक्सर इसी बारे में बातें व विवाद भी किया करता था. तीसरे हैं सलिल चौधरी. उनका संगीत और उनका व्यक्तित्व मेरे जीवन में अपना अलग स्थान रखता है. लक्ष्मी-प्यारे और गणेश, फेंकू इन लोगों ने भी अपनी मित्रता से मुझे बहुत कुछ दिया है."

इतना बड़ा कलाकार अपनी जीवन सहचरी के बारे में कुछ न कहे ? सहचरी भी आशा भोंसले . . . जिसने जीवन को कला के लिए समर्पित किया हुआ है. मैंने फिर कुछ घुमा कर पूछा, "आपके साथ जो कलाकार काम करते हैं, उनसे आप क्या संबंध रखते हैं ?"

"एकदम परिवार जैसा. किशोर दा, लताबाई, आशाबाई, सबसे आप पूछ सकती हैं कि वे मेरे एकदम सगे हैं." आशा के नाम को इस साधारण रूप में कहने के पीछे केवल उनका सहज शालीन संकोच ही होगा. या पत्रकार बंधुओं की विशिष्ट कृपा का परिणाम! मैं अचानक विषय बदल कर नये गायकों के बारे में पूछती हूं तो वे एक नाम लेते हैं चंद्रशेखर गाडगिल, उनकी अपनी नयी खोज, जिससे उन्होंने 'कुदरत' का शीर्षक गीत गवाया है.

नये स्वर संगठन जन्म ले रहे हैं. रिहर्सल शुरू हो रहा है और मेरे जेहन में पंचम उर्फ आर. डी. का वह गीत उभर आता है 'किनारा' का —

नाम गुम जायेगा
चेहरा ये बदल जायेगा
मेरी आवाज़ ही पहचान है
गर याद रहे.

परंपराओं के बंधनों को नकारता लहराता संगीत . . . शायद यह वह स्वरलहरी है जो नयी परंपराओं को जन्म देती है, यह वह संगीत है जो न लोक संगीत है, न पाश्चात्य, न भारतीय परंपरागत, लेकिन भारत के संगीत निर्देशक आर. डी. बर्मन का जरूर अपना है.

पता : ओडीना, सेंट्रल एवेन्यू, सांताक्रूज (पश्चिम), बंबई ४०००५४

Generated by CamScanner from intsig.com

राहुलदेव बर्मन

संगीत की परंपराओं से विद्रोह का दूसरा नाम है पंचम यानी राहुलदेव बर्मन! उन्होंने पाश्चात्य वाद्ययंत्रों का प्रयोग अवश्य किया मगर अपनी अलग शैली तथा स्वरों की विविधता की खोज में भी सतत प्रयत्नशील रहे और अपने पिता स्व. सचिनदेव बर्मन के संगीत की ताजगी एवं मधुरता को भी जीवंत रखा है.

मुखपृष्ठ एवं इस चित्र के छायाकार : डी. आर. यादव

Generated by CamScanner from intsig.com